International Journal of Research in Social Sciences
Vol.9, Issue 3, March -2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com Double-Blind Peer Reviewed
Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

महात्मा गांधी विचार का कलात्मक प्रयोग एवं समकालीन परिदृश्य मे प्रासंगिकता।

प्रेषक

डॉ. संदीप कुमार मेघवाल

(अतिथि शिक्षक, दृश्यकला विभाग मोहनलाल
सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर)
पता- मु. पो.- गातोड़ (जयसमंद), तहसील- सराड़ा,
जिला- उदयपुर, राजस्थान-313905

गांधी जी का जीवन सत्य, अहिंसा, सादगी और भाईचारे पर आधृत था इसलिए कला के संबन्ध में उनका विचार भी सादगी, सरलता, जीवंतता और जनमानस से सहज जुड़ने की प्रक्रिया के अनुकूल था। वे कला सत्यम् शिवम् सुंदरम् में सुन्दरम् के स्थान पर रखते थे। गांधी जी का स्वदेशी अपनाओं का नारा सिर्फ स्वदेसी उद्योग क्षेत्र तक ही सीमित नहीं है, यह स्वदेशी कला एवं संस्कृति को बढ़ावा देना भी है। लेकिन साधारण तौर पर इस नारे को स्वदेशी उद्योगो के बढ़ावे के संदर्भ से ही जोड़ा गया है। हमे गांधी विचार का ग्रामीण विकास में कलात्मक प्रयोग कि और भी ध्यान आकर्षित करना चाहिए।

महात्मा गांधी टोल्सटाय के कला सम्बन्धी विचारों से वे सहमत थे उन्होंने अपनी कला पुस्तक हाटिन आई में कहा है कि आजकल ऐसी कोई कला सच्ची कला नहीं हो सकती, जो जनता के हाथों द्वारा प्रस्तुत की गयी हो। गाँधी जी का कथन था कि मशीनयुग की दौड़ में हृदय की सच्चाई को मेहनत के हाथों द्वारा प्रकट करना ही असली कला है। चर्खा और खादी इस कला के प्रतीक थे। (चित्र संख्या-1)

चित्र संख्या-1

International Journal of Research in Social Sciences
Vol.9, Issue 3, March -2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com Double-Blind Peer Reviewed
Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

स्वदेशी वस्तुओं का प्रयोग उनकी दृष्टि में लोक जीवन और लोक कला को बढ़ावा देना था। यह मानना कि कला और संस्कृति के प्रति उनका कोई लगाव नहीं था, उचित नहीं लगता। जब भारतीय पुनर्जागरण में कला और संस्कृति के योगदान की भूमिका पर शान्तिनिकेतन के कला युवा छात्र रामचन्द्रन ने अक्तबर 1924 में उनसे प्रश्न किया तो उनका यह सटीक उत्तर था, जिससे कला के बारे में उनकी अवधारणा का पता चलता है। गाँधी जी ने उत्तर दिया कि ' इस विषय पर मेरे बारे में बड़ी गलत फहमी हैं। मैं दावे के साथ कह सकता हूँ कि मेरे जीवन में सचमुच कला का अचेष्ट समावेश हैं।

मैं कला के बाहरी लकदक रूप का नहीं आन्तरिक सौन्दर्य का पुजारी हूँ। मैं ऐसी मध्यवर्गीय कला और संस्कृति में दिलचस्पी नहीं रखता जो अंग्रेजी भाषा और पश्चात्य सभ्यता के अनुकरण के रूप में उत्पन्न हुई है। 'गाँधी जी गाँव के गरीबों तक कला और संस्कृति के प्रसार के पक्ष में थे इसलिए आदिवासी कलात्मक उपकरणों में उनका गहरा लगाव था। उनका विचार था कि 'मेरी कल्पना में आदर्श गाँव में ग्राम कवि, दस्तकार वास्तशिल्पी भाषाविद शोधकर्ता आदि सभी होंगे। वहाँ एक गाँव रंगशाला भी होगी जो सांस्कृतिक गतिविधियों का केन्द्र बनेगी।

भारतीय लोक कला के पुनरुत्थान एवं जनसामान्य की कला को बढ़ावा देने के पक्ष में गाँधीजी सदा रहे। झोपड़ियों में रहने वाले गाँधी अपने आश्रम की झोपड़ियों एवं कच्चे घरौंदों को गोबर मिट्टी से लिपवा कर कलात्मक मण्डपों एवं चित्रों से सुसज्जित करवाते थे जिससे

चित्र संख्या-2

International Journal of Research in Social Sciences
Vol.9, Issue 3, March -2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com Double-Blind Peer Reviewed
Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

उनका लोक कला के प्रति लगाव सहज प्रतीत होता है । इतना होने पर भी वे कला को गौण समझते हुए कहा करते थे कि 'हमें चाहिए कि हम पहले जीवन की आवश्यक वस्तुएँ जुटाकर जनसाधारण को उपलब्ध करावें और जीवन को अलंकृत करने वाली और शालीन बनाने वाली चीजें पीछे स्वयं आ जायेंगी।[1]

गांधी जी की स्वदेसी शोच के परिणाम मे जामिनी राय जैसे कई चित्रकारों की पीढ़ी तैयार हुई। जामिनी राय को गांधीजी ने शुद्ध स्वदेसी राष्ट्रवादी कलाकार की संज्ञा दी गई क्यूंकी उनकी कृतियाँ शुद्ध रूप से लोक आदिम कला से प्रभावित थी। (चित्र संख्या-2) स्वाधिनता संग्राम के इस दौर मे कई कलाकार बड़चडकर अपना कलात्मक अवदान दे रहे थे। इसी प्रकार मूर्तिकार देवीप्रसाद राय चौधरी द्वारा निर्मित 1982 मे 'स्वतन्त्रता स्मारक' नामक कास्य मे ढला शिल्प बनाया जो दिल्ली मे स्थापित है। (चित्र संख्या-3)

चित्र संख्या-3

गांधी विचार के अनुसार एसे विचार आदिम काल से एवं समकालीन परिदृश्य मे अभी भी जीवंत है। आदिवासी आज भी साधारण भौतिक सुख सुविधाओं से दूर चुनिन्दा प्राप्त वस्तुओं का प्रयोग कर अपने आवास को अलंकृत कर जीवन यापन करता है। यहाँ गांधी विचार की प्रासंगिकता देखने को मिलती है।गांधी जी का कला से लगाव प्रारम्भ से ही रहा है। इसी के परिणाम से भारतीय पुनरुत्थान कालीन कला

चित्र संख्या-4

International Journal of Research in Social Sciences
Vol.9, Issue 3, March -2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com Double-Blind Peer Reviewed
Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

आंदोलन से भागीदार कलाकारों से करीबी सम्बन्द रहे थे।

भारतीय कला जब अपने अस्तित्व को छोड़ देने के कगार पर थी, तब ई. वी. हैवेल ने सन् 1884 ई. में मद्रास कला विद्यालय के प्राचार्य पद पर रहकर संबल प्रदान किया और संसार का ध्यान भारतीय कला और संस्कृति की ओर आकर्षित किया। सन् 1896 ई. में वे चेन्नई कला विद्यालय से कलकत्ता आर्ट स्कूल के प्रिंसिपल बने। भारतीय जीवन आदर्श से अजंता, राजपूत एवं मुगल शैली को आधार मानकर कलाभिव्यक्ति करने की सलाह दी।[2]

चित्र संख्या-5

इसके परिणाम मे शांतिनिकेतन के कई कलाकारों ने जिसमे प्रमुख नंदलाल बॉस ने कांग्रेस के विभिन्न अधिवेशन मे मंचसज्जा मे कार्य किया जिनके विषय भारतीय लोक आदिम कला का थे जिससे अधिवेशन मे आने वाले लोग इन चित्र संसार को स्वदेशी संस्कृति से प्रेम भाव का संचरण हो सके।(चित्र संख्या-4) नंदलाल बॉस द्वारा चित्रित गांधी जी का दांडीमार्च चित्र बहुत प्रसिद्ध है (चित्र संख्या-5)

स्वाधिनता इतिहास से ज्ञात होता है कि गांधी एवं ग्रामीण आदिवासी भारत के मध्य विचारों का मजबूत सांस्कृतिक सरोकार रहा है। किसी भी बात को सहज ढंग से कहने या समझाने के लिए चित्रों का प्रयोग किया जाए, तो वह बात बहत सरल तरीके से समझ आ जाती है। ऐसा कई विद्वान कहते है एवं करते है चित्रों के प्रयोग हमे पौराणिक ग्रंथो एवं समकालीन साहित्य में भी भरपूर देखने को मिलता रहा है। समकालीन परिदृश्य में महात्मा गांधी एवं जनजातीय विकास में कला की बात करे तो गांधी एक येसे आइकन रहे है जिनके चित्रो का प्रयोग अधिकतर योजना से जोड़कर किया जाता रहा है निसंदेह गांधी एक येसे हीरो हे जिनके कृतित्व एवं व्यक्तित्व से दूर देहाती जनजाति लोक में चीर परिचित है। इसलिए इनके चित्रों का प्रयोग जन कल्याणकारी योजनाओं से अक्सर जोडकर जनप्रसार हेतु प्रयोग किया जाता रहा है। जेसे रोजगार के लिए आत्मनिर्भरता के लिए चरखे का प्रयोग, मनरेगा

International Journal of Research in Social Sciences
Vol.9, Issue 3, March -2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com Double-Blind Peer Reviewed
Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

योजना, स्वच्छता अभियान में गांधी के चस्मे का लोगो प्रयोग आदि कई उदाहरण है।(चित्र संख्या-6)

चित्रकला की आधुनिक प्रवृत्तियों पर भारतीय जन जागरण एवं गाँधीवादी विचारधारा का पूर्ण प्रभाव दर्शनीय है । देश व्यापी राष्ट्रीय जागृति ने सारे देश के कलाकारों में नई चेतना का उन्मेष भरा । इस दृष्टि से भारत में राष्ट्रीय और सांस्कृतिक इतिहास के अभ्युत्थान में कला का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है ।

गाँधी जी द्वारा प्रदीप्त जन जागरण के इतिहास का क्रमिक विकास उस समय की कला शैलियों में सहज ही द्रष्टव्य है। आचार्य अवनीन्द्र नाथ ठाकुर ने चित्रकला के जिस नवोत्थान का उद्घोष किया था, उसका सफल नेतृत्व उनके शिष्यों ने बड़ी सफलता से किया। सर्वतोमुखी प्रतिभा के धनी नन्दलाल बसु इस क्षेत्र में सबसे आगे थे। वे असली भारतीय चित्रकार थे। भारतीय पौराणिक कथाओं एवं चरित्रों के साथ ही गाँधी जी के सत्याग्रह आन्दोलनों एवं राष्ट्रीय भावनाओं का अंकन उन्होने बड़ी सफलता एवं सजीवता से किया। उनका गाँधी जी की दाण्डी यात्रा नामक चित्र, कला में अत्यधिक सराहनीय रहा। भारतीय आधुनिक चित्रकला में 20वीं शती के प्रारम्भ से ही कलाकार गाँधी जी की विचारधारा से प्रभावित होने लगे थे। मशीन युग के विपरीत लघु उद्योग, चर्खा, खादी ग्रामीण जीवन की सादगी, हस्तकला तथा सत्य, अहिंसा आदि के पोषक गाँधी जी ने भारतीयों को सादा और सच्चे जीवन का पाठ पढ़ाया।

समकालीन दौर कि और ध्यान आकर्षित करें तो हाल ही में सरकार के स्वच्छता अभियान की बात करे तो यह योजना जमीनी तौर पर लागू एवं जन प्रसार हेतू गांधी के चस्मे एवं चित्र संदेश माध्यम का प्रयोग पूरे देश में भरपूर किया है।(चित्र संख्या-6) गांधी के चित्र वॉल पेंटिग करके नाना प्रकार के संदेश देने का प्रयोग किया जेसे गांधी के चित्र के साथ कचरा न फैलाने का संदेश लिखा हूआ है।(चित्र संख्या-8) गांधी स्वयं कचरा उठाते हूये।(चित्र संख्या-7) देहातों में घरो की बड़ी - बड़ी दीवारों के पीछे भरपूर चित्रण इन दिनों देखने को मिलते है। इस प्रकार के प्रयोग दूर देहाती जनजाति क्षेत्रो

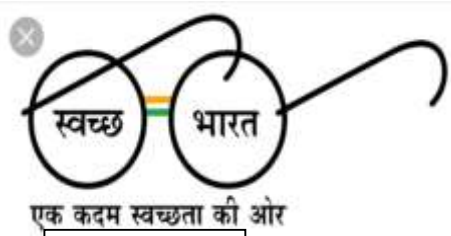

चित्र संख्या-6

International Journal of Research in Social Sciences
Vol.9, Issue 3, March -2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com Double-Blind Peer Reviewed
Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

में बहूत हूए एवं इनका प्रभाव भी बहूत पड़ा है। लोग स्वच्छता के प्रति जागरूक हूए है। कई गाँव में पूरे के पूरे गली - गलियारे चित्रित किए हूए मिलते है जिससे लोग जिधर भी देखे उधर चित्र दिखाई पड़े तो आखिरी में वह गंदगी न फैलाने का प्रण ले बैठता है। येसे कई कलात्मक प्रयोग जमीनी तौर पर कारगर साबित हो रहे है।

चित्र संख्या-7

भारतीय कला इतिहास में जामिनी राय ऐसे ही कलाकार हैं, जिन्होने लोक जीवन के महत्त्व को पहचाना और अपने लोक रंगों के माध्यम से लोक जीवन से सम्बन्धित लोक शैली में अनेक चित्र बनाए जो भारत में ही नहीं वरन् विदेशों में भी अपनी जमीन से जुड़े होने के कारण प्रसिद्ध हुए। आधुनिक चित्रकला के क्षेत्र में उनका उपर्युक्त नव आन्दोलन इतिहास की अविस्मरणीय घटना है। देश को वास्तविक लोक कलात्मक संस्कृति को जामिनी राय ने कलात्मकता से अपनाया। तीन बहनें , सीता की अग्नि परीक्षा तथा अन्य धार्मिक चित्रों में लोक कला की सरलता और सच्चाई को अपना कर उन्होने कला जगत में अपना विशेष स्थान बनाया।

गाँधी जी उनकी सरलता से अत्यधिक प्रभावित थे। स्वदेशी वस्त्रों को अपनाने के लिए गाँधी जी ने खादी को विशेष महत्त्व दिया। खादी पर किए जाने वाले छापे लोक कलात्मक रंगों एवं चित्रों से अधिक सुसज्जित होते हैं, जिसमें जामिनी राय की शैली का प्रभाव विशेष दर्शनीय है।(चित्र संख्या-2)

चित्र संख्या-8

International Journal of Research in Social Sciences
Vol.9, Issue 3, March -2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com Double-Blind Peer Reviewed
Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

आधुनिक भारतीय चित्रकला की आधुनिक भारत के स्वरूप में प्रतिष्ठित करने का श्रेय एक ऐसे कलाकार को है, जिसने विदेशों में शिक्षा ग्रहण की किन्तु उसने अपनी कला का आधार बनाया।

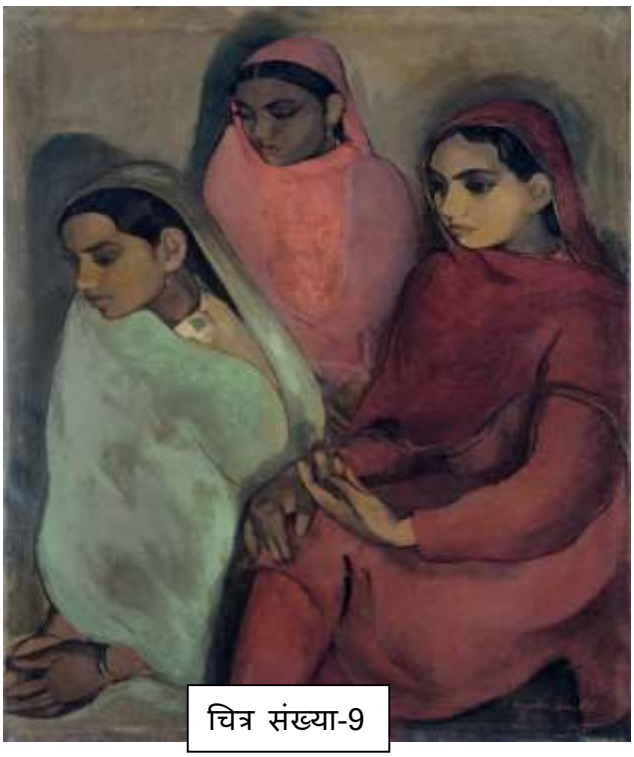
चित्र संख्या-9

भारतीय ग्रामीण जीवन को अमृता शेरगिल के चित्रों में भारतीय जन जीवन की गरीबी, असहायता, भोलापन आदि विशेष उल्लेखनीय है। उनके चित्रों में दलित वर्ग की भूख, प्यास और पीड़ा बोलती है। हिन्दी कथा साहित्य में जो कार्य प्रेमचन्द ने किया, कुछ वही कार्य चित्रकला के क्षेत्र में अमृता शेरगिल ने किया। उनके चित्रों में भारत की आत्मा बोलती है। (चित्र संख्या-9)

गाँधीजी का भारत उनके रंग और रेखाओं में साकार हो उठा है। मदर इण्डिया, लड़कियाँ, वर वधू का श्रृंगार, संगीतकार, भिखमंगे जैसे चित्र कला जगत की थाती हैं । भारतीय - आदिवासी कला को आधार बना कर आधुनिक बोध को अभिव्यक्त करने की शैली पश्चिम की छाप कही जा सकती है, किन्तु भारतीय चित्रकारों ने आदिवासी कला की सहजता को नवीन रूप देकर जहाँ आधुनिक परिवेश को उकेरने का प्रयत्न किया है। बद्रीनारायण, रसिक रावल , आत्मेलकर आदि कलाकारों ने आदिवासी संस्कृति के प्रतीकों एवं कार्य कलापों को आधार बना कर अपनी चित्रकला को व्यक्तित्व प्रदान किया।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol.9, Issue 3, March -2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com Double-Blind Peer Reviewed
Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

भील , कोल , मछुआरे आदि इन कलाकारों की चित्रकला के आधार रहे हैं ।

भारतीय जन जीवन को चित्रित करने वाले चित्रकार ग्रामीण जीवन से जुड़े हुए रहे हैं। ग्रामीण परिवेश, रहन सहन -, खेती बाड़ी -, सरल जीवन आदि का यथार्थ चित्रण कर बहुत से कलाकारों ने आधुनिकता बोध की भाग दौड़ से अपने को बचाए रखा है। शैलोज मुखर्जी , नीरोद मजुमदार , पारितोष सेन, बेन्द्रे, स्याबक्स चावड़ा, रामकिंकर, शान्ति दवे जैसे चित्रकारों ने प्रेमचन्द के भारत को अंकित कर भारतीय चित्रकला की सही दिशा को प्रदीप्त किया है ।

चित्र संख्या-10

गांधी जी विचारों का कलात्मक प्रयोग आजतक अनवरत चल रहा है। गांधी विचार भारतीय ग्रामीण मे इतने घर किए हूए है कि कोई भी आयोजन योजन इनके चीत्रों के साथ कहने का ट्रेंड बन गया है। आज की समकालीन आदिवासी कला की बात करे तो उसमे भी गांधी के व्यक्ति चित्र बनने लगे है जैसे (चित्र संख्या-10) जिसमें जो बिहार की मधुबनी पेंटिग मे गांधी को बनाया है। वही चित्र (संख्या-11) मे वर्ली आदिवासी कला मे गांधी को चरखा कातते चित्र बनाया है इससे ज्ञात होता है की गांधी विचार आदिवासियों मे किस तरह घर किया हूआ है।

अन्य उदाहरण स्वछता अभियान का है इस अभियान के दरमियान व्यापक स्तर पर स्वच्छता के ऊपर चित्रकारी प्रतियोगिता भी आयोजित हूई जिसमें स्कूल लेवेल पर खेरवाड़ा के आदिवासी अञ्चल से कपिल मीणा की पेटिग ने प्रथम स्थान प्राप्त किया जिस पर प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने स्वयं पेटिका ट्वीट कर कपिल को बधाई दी जो अपने आप

चित्र संख्या-11

International Journal of Research in Social Sciences
Vol.9, Issue 3, March -2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com Double-Blind Peer Reviewed
Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

आदिवासी क्षेत्र में गांधीवादी स्वच्छता अभियान की समज का परिचायक है। इस अभियान में कई ग्राम पंचायत में वोल चित्रण कार्य करवाने पर उनको अखिल भारतीय स्तर पर पुरस्कृत भी किया गया।(चित्र संख्या-11)

चित्र संख्या-12

एक ओर राष्ट्रीय स्तर पर आदिवासी लोक कला में गांधीवादी चित्रों की बात करू तो परम्परा से हटकर नवआग्रह में गांधी के चित्र उकेरे जाने लगे है जैसे बिहार की मधुबनी पेंटिग में गांधी बनाए जाने लगे है जो कभी लोक कथाओं पर आधारित चित्रण हुआ करता था। तो मोलेला म्यूरल आर्ट में भी गांधी देखने को मिल जाते है तो महाराष्ट्र की वर्ली पेंटिंग में गांधी का सहज एवं सृजनात्मक प्रयोग आमजन में किया गया है। इन तमाम बातों से यह कहा जा सकता है की महात्मा गांधी के चित्रों का प्रयोग जनजाति विकास कार्य में व्यापक चिरस्थाइ जगह बनाई हुई है विकास में एसे कलात्मक प्रयोग बहुत सार्थक साबित हुये हैं।

उपसंहार- उपसंहार स्वरूप यह कहा जा सकता है कि गांधी जी का योगदान प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से कला एवं सांस्कृतिक क्षेत्र मे बहुत महत्वपूर्ण है। कलाकार का सृजन समाज का प्रतिबिंब होता इस बात की समझ गांधीजी मे गहरी थी तभी उन्होने इस कलाकारों को अपने साथ रखा और विभिन्न कांग्रेस के अधिवेशनों, सामाजिक आयोजनों मे अपने साथ रखा।

चित्र संख्या-13

कलाकारों के द्वारा चित्र बनवाकर भारतीय मूल सांस्कृतिक बिंबो को उकेरा। उनको ज्ञान था की आयोजन मे आया व्यक्ति इन चित्रों को देखर ज्यादा समय व्यतीत करेगा

International Journal of Research in Social Sciences
Vol.9, Issue 3, March -2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com Double-Blind Peer Reviewed
Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

ओर अपनी संस्कृति पर गर्व महसूस करेगा एवं स्वदेशी का भाव उत्पन्न होगा। स्वतन्त्रता आंदोलन के समय से महात्मा गांधी की स्वदेशी अपनाओं के प्रचार ने ही भारतीय कला मे लोकआदिम कला का बीजांकुरण हो गया। उस जमाने के शांतिनिकेतन के कलाकारों मे नंदलाल बॉस का विशेष लगाव रहा। बॉश के साथ उनके विद्यार्थियो को भी सम्मिलित किया जिससे एक सकारात्मक पहल ने विस्तृत रूप लिया जो बाद के कलाकारों मे भी पारंपरिक रूप से संचालन का होता रहा।

चित्र संख्या-14

येसे चित्रकार जो भारतीयता पहले है आधुनिकता बाद में इनमे जामिनी रॉय, अमृता शेरगिल, जॉर्ज किट, शैलोज मुखर्जी, रामकिंकर, एम. एफ. हुसैन (चित्र संख्या-12), बेंद्रे, परितोष सेन, रसिक रावल विशेष उल्लेखनीय है। इन परम्पराओं को आज के कलाकार भी निभा रहे है। कई कलाकार गांधी विचारों का चित्रण करते है। जैसे श्याम शर्मा बिहार से (चित्र संख्या-14) वीरबाला भावसार, राजस्थान से जो रेत से चित्र बनाते एवं आजीवन खादी वस्त्रों को ही पहना पूर्ण रूप से गांधी विचार के अनुनायी रहे है। (चित्र संख्या- 13)

सरकारी योजनाओ का गांधी जी नाम के साथ जोड़कर नाना प्रकार के सकारात्मक संदेश दिया जाता है खासकर आदिवासी ग्रामीण अंचल मे इसका सफल प्रयोग गांधी समय से आजतक चालयमान है। इन चित्रो के माध्यम से जनजागृति का प्रयोग भरपूर हो रहा है। यह कहना सटीक है कि आदिवासी जीवन मे सकारात्मक संदेश हेतु गांधी चित्रण का बहुत बड़ा योगदान है।

चित्र संख्या-15

संदर्भ ग्रंथ-

1. नीरज, जयसिंह, 1996 महात्मा गांधी और कलात्मक सृजन, समकालीन कला, ललित कला अकादेमी कि पत्रिका 17(5): 32-36
2. प्रताप, रीता, 2013, भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास: राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी जयपुर, 317